Saarth
E-Journal of Research

ISSN NO: 2395-339X

वैदिक साहित्यमें पर्यावरण चिन्तन

डॉ. ईश्वर एल. मेहरा*

जगतमें विद्यमान प्राणीमात्र के कायिक, बौद्धिक एवं आत्मिक विकास के लिये पर्यावरण शुद्धि आवश्यक है । सकल प्राणी जो अपनी आँखो से जिस जगतको देखते है वह भौतिक जगत है । जो पदार्थ चारों ओर से दृग्गोचर होते है वे सब पञ्चमहाभूत से पैदा हुए है । ईन पञ्चमहाभूतों को ही पर्याय रुपसे पर्यावरण कहा जाता है । पञ्चमहाभूतों में विकृति होने से पर्यावरण दूषित हो जाता है । भौतिक सुख की लालसामें यन्त्र आधारित जगत हो चुका है । कम शारिरीक कष्ट पहुँचानेके लिये विज्ञान नये नये यन्त्र निर्माण करता है । पर जब सजगता पाई तो मालूम हुआ कि वैज्ञानिक यन्त्रों से पैदा हुए प्रदूषण एवं प्रकृतिके संरक्षण के प्रति हमारी उदासीनता से पर्यावरण दूषित हो चूका है । प्रदूषित पर्यावरण की समस्या न केवल भूमिगत प्राणीओंको है अपितु पातालमें रहनेवाले, गगन विहारी एवं जलचरोंको भी सताती है । किन्तु तद्विषयमें केवल मनुष्य हि चिन्ताकुल है और होना भी चाहिए क्योंकि प्राणीमात्रमें मनुष्य ही विवेक चेतना से पूर्ण है । वही पर्यावरण समस्या का चिन्तन और समाधान कर सकता है ।

पर्यावरण समस्या के निवारण हेतु निपुण ज्ञान-विज्ञान से जुडे कईं पर्यावरणविद वैज्ञानिको ने दिन-रात चिन्तन किया है, किन्तु निश्चित उपायके अभावमें उनका चिन्तन उत्तरोत्तर चिन्ताकर साबित हुआ है। तब हम जगतके प्राचीनतम साहित्य वेदों में अवगाहन करते हैं तो मालूम पडता है कि पर्यावरण के बारे में प्राचीन ऋषियों ने ठीक ठीक चिन्तन किया है । वैदिक मनीषियों ने पर्यावरण की सुरक्षा के बारे में विशिष्ट चेतना का परिचय दिया था ।

हमारा वैदिक साहित्य तपोवन से आया है अतः प्रकृति को ही माता-पिता का दर्जा दिया है ।

ऋगवेदमें द्युलोक को पिता तथा पृथ्वी लोक को माता कहा गया है । अन्तरिक्ष लोक इनके द्वारा उत्पन्न हुए है, अतःपुत्र के समान है ।[1] इन तीनों लोकों के सन्तुलन बनाये रखने के लिये वेदों में यत्र-तत्र पर्यावरणीक सन्देश दिया गया है । ऋग्वेद में प्रकृति का अतिक्रमण देवताओं के लिये निषिद्ध है । अतिक्रम्य न गच्छति मरुतः ।[2]

---

*डॉ. ईश्वर एल. मेहरा ,संस्कृत विभाग, सेन्ट झेवियर्स कॉलेज, अहमदाबाद.

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

अथर्ववेद के पृथ्वी सूक्तमें स्पष्ट रुप से पृथ्वी को किसी प्रकार की क्षति पहुँचाने का निषेध किया है । यन्ते भूमि विसनामि क्षिप्रंतदामि रोहतु । तेमर्भबृमृग्वारिमा ते हृदयमर्थियम् ।[3]

ऋग्वेदमें कहा गया है कि नदी, खानों, समुद्रों तथा पर्वतों से हम उतना ही ग्रहण करें, जो हमारे लिये पर्याप्त और सुखकारी हो । यत्सिन्धौ पद सिकम्यां यत्समुद्रेषु मरुत सुवर्हिषः । तत्पर्वतेषु भेषजम् [4]। क्योंकि इसके विपरीत आचरण किया तो पृथ्वी काँपने लगती है ।

ऋग्वेद के एक मन्त्र में कहा गया है,

आप ओषधीरुत नोऽवन्तु ।धौर्वना गिरयो वृक्ष केशाः ।[5]

जल,औषधी,वन,वृक्ष,पर्वत और द्युलोक मानव के रक्षक है ।अत एव इन्हें हानि मत पहुँचाओ ।

या द्यावा पृथ्वी अभिशोचीः । मा अन्तरिक्षं मा वनस्प्तीन् । इति । अर्थात् तुम द्यु,पृथ्वी,अन्तरिक्ष और वनस्पतियों को हानि मत पहुँचाओ।

औषध्यास्ते मूलं मा हिंसिषम् [6]। इति । अर्थात् वृक्ष वनस्पतियों को न काटें और न उन्हें हानि पहुँचाए ।

आपतां त्वा द्यावापृथिवी ।[7] इति । यदि तुम द्यु और पृथ्वी की रक्षा करोगे तो वे भी तुम्हारी रक्षा करेंगे ।

पर्यावरण की रक्षा एवं समृद्धता बनाये रखने के लिये संस्कृत साहित्यमें प्राचीन कालसे ही वृक्षों,नदियों,पर्वतों एवं पर्यावरण रक्षक अन्य घटकों की पूजा पर बल दिया गया है । पूजा से मतलब उसका संवर्धन करना है । त्याग,ज्ञन,विज्ञान और विद्या से पर्यावरण की शुद्धि के लिये आलस्यरहित होकर उसका शोधन एवं रोपन करें यथा-

शोधनं, रोपनं, त्यागं ज्ञान-विज्ञान विद्यया ।

कुर्याद् अतन्द्रितः नित्यं पर्यावरण शुद्धये ।। इति ।

शुक्ल यजुर्वेदमें पर्यावरणीय तत्वों से प्रार्थना की गइ है कि द्यु अन्तरिक्ष तथा पृथ्वी हमें शान्ति प्रदान करे, सभी देवगण शान्ति प्रदान करे । सर्वव्यापी परमात्मा सम्पूर्ण जगत में शान्ति स्थापित करें । शान्ति भी हमें परम शान्ति प्रदान करें । अर्थात् कहीं भी प्रदूषण न रहे ।

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

ॐ द्यौ शान्तिरन्तरिक्ष शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः वनस्पतयः शान्तिर्विश्वदेवाः शान्तिः ब्रह्म शान्तिः सर्व शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।[8]

प्राकृतिक ह्रास को दूर करने के लिये हमारे ऋषिमुनियों ने विभिन्न धार्मिक क्रियाओं के रुपमें अनेक उपायों को सूचित किया है । जैसे -

अग्नौप्रस्ताहुतिः, वृष्टिर्वृष्टेरन्नततः प्रजाः । इति । अर्थात् अग्निमें भली भाँति दी गइ आहुति सूर्य को प्राप्त होती है । सूर्य से वर्षा होती है वर्षा से अन्न उत्पन्न होता है, उससे प्रजा की उत्पत्ति होती है । यज्ञानुष्ठान से पर्यावरण सन्तुलित बना रहता था । यज्ञमें प्रकृति के श्रेष्ठ पदार्थों की हवन दी जाती थी । महर्षि दयानन्द सरस्वती ने हवन डाले जानेवाले पदार्थों का वर्णन किया है- यज्ञ समिधा-पलाश,शमी,पीपल,बड,गूलर,आम, बिल्व आदि । होम के द्रव्य चार प्रकार के प्रथम सुगन्धित- कस्तूरी, केसर, अगरतगर, श्वेत चन्दन, इलायची, जायफल, जावित्री आदि । द्वितीय पुष्टि कारक- घृत, दूध, कन्द, अन्न, चावल, गेहुं, उडद आदि । तृतीय मिष्ट- शक्कर, शहद, छुआरे, दाख आदि । चतुर्थ रोगनाशक-सोमलता, गिलोय आदि औषधियाँ ।(संस्कारविधि, सामान्य प्रकरणम्, दयानन्द सरस्वती) ये सारे पदार्थ किसी न किसी रुप में पर्यावरण को शुद्ध करते है और प्रदूषण से भी बचाते है ।

जलीय प्रदूषण से विश्व भयाक्रान्त है । ऋग्वेद में जल को माता के समान पूज्य माना गया है, क्योंकि वह सबको शक्ति प्रदान करता है, अतः उसकी रक्षा करनी चाहिए ।[9]

अथर्ववेद में ऋषि कहते है- शुद्धा न आपस्तन्वे क्षरन्तु यो नः सेदुरप्रिये तं नि दध्मः । पवित्रेण पृथिवि मोत पुनामि ।[10] हमारे शरीर की पुष्टि के लिये जल शुद्ध जल बरसे, अप्रिय, स्वाद विहिन एवं अस्वास्थ्यकर जल दूर कोइ दूसरे स्थान पर चला जाये मैं तो पवित्र जल से अपना शरीर बढाउँगा और पवित्र करुँगा । यजुर्वेद में बताया गया है कि,

मा आपो हिंसी । सुमित्रिया न आपः ओषधयः सन्तु । जल की हिंसा नही करनी चाहिए, क्योंकि वह औषधी स्वरूप है ।[11]

इसी प्रकार वायु मनुष्य का प्राण है, कालिदास कहते है कि यया प्राणिनः प्राणवन्तः ।[12] किन्तु आज हवा में दूरध्वनियन्त्रों के टावरों से कितना रैडियेशन फैला हुआ है । शुद्ध वायु की चाह में हम सुबहमें जल्दी उठते हैं और योगाभ्यासादि करते है ।

वैदिक ऋषियों ने वायु का बार बार स्तवन किया हा । ऋग्वेद में प्रदूषण मुक्त वायु को औषधी दीर्घ जीवन प्रदायिनी, अमृतरुपा, माता-पिता, भाई एवं मित्र कहा गया है ।[13]

Saarth E-Journal of Research

ISSN NO: 2395-339X

वैदिक ऋषि प्रार्थना करते है कि वायु हमारे हृदय के लिये भेषजरुप में शान्तदायक, सुखदायक होकर बहे और हमारी आयु को बढावे ।

आ वात वाहि भेषजं हि वात वाहि यद्रपः । त्वं हि विश्वभेषजं देवानां दूत ईयसे ।[14] वैदिक यज्ञ वायु प्रदूषण निवारण के एक सशक्त साधन है । वायु को शुद्ध और गुणकारी बनाने के लिये जो अणु-भेदक शक्ति का स्रोत यज्ञके अग्निमें रहता है । यज्ञ करने से वायु पर्दूषण मिट जाता है । अग्निहोत्र सायं प्रातगृहाणां निष्कृतिः स्विष्टं ।[15] आज चतुर्दिक वाहनों, लाउडस्पीकरों, टी.वी., ट्रान्झीस्टर आदि का ध्वनि हमारी श्रवण शक्तिको क्षीण कर रहा है । ऋग्वेद में अधिक ध्वनि न करने का सन्देश देते हुए मौन रहने की शिक्षा दी है । उन्मदिता मौनयेन वार्ता आ तस्थिमा वयम् ।[16]

अथर्ववेदमें एक स्थान पर कहा गया है कि अधिक तीव्र ध्वनि से बचना चाहिए, मधुर एवं मन्द स्वर में पारस्परिक वार्तालाप करें, और पारिवारिक कलह से बचें ।

मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन मा स्वसा स्वसारमुत स्वसा ।

सम्यन्च सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया ।।[17] इससे सामाजिक समरसता वढती है । ईन उपायों से ध्वनि प्रदूषण से बचा जा सकता है ।

आज हम अपने अनुसंधान और विकास क्रम में क्षत-विक्षत करने पर उतारु है इस सम्बन्धमें ऋषि हमें हृदय हीन होने से रोकते हैं - यत् ते भूमे विखनामि क्षिपं तदपि रोहतु । मा ते मर्म विमषवरि मा ते हृदयमर्पियाम् ।।[18] हे धरती माता ! जब हम आपको खोदें तो वे वस्तुएँ शीघ्र उगे-बढे । अनुसंधान के क्रममें हमारे द्वारा आपके मर्म स्थलों को अथवा हृदय को हानि न पहुँचे ।

वैदिक ऋषि मानव जीवन में प्राकृतिक संपदा के महत्वको समझते थे ।

तभी उन्हों ने कृतज्ञतावश प्रकृति की हर कृति में ईश्वर के दर्शन किये। वैदिक मन्त्र हमारी मानसिकता बनाते हैं कि नदियाँ देवी रुपा है, वक्ष देवता हैं, पहाड देवता है, पञ्चतत्व देवता है, उनका निर्मल तन्मात्र स्वरुप श्रेयसेकर है। वैदिक साहित्यमें हमें जिन देवताओं की पूजा अर्चना एवं स्तुतियाँ मिलती है उनके सम्बन्ध में विद्वानों की मान्यता है कि वे प्राकृतिक तत्वों में निहित शक्तियों के प्रतीक है । उन्हों ने ईन्हीं शक्तियों में देवी देवताओं की प्रतिष्ठा करके प्रकृति से तादात्म्य स्थापित कर मानवीय प्रेम को बढाया ।

वैदिक काल के लोगों ने प्राकृतिक सम्पदाके महत्व को समझते हुए उनकी सुरक्षा के भी प्रयास किये जिन सिद्धान्तो और आदर्शो के माध्यम से पर्यावरण सन्तुलित रह सकता था । उन्हीं माध्यमों को उन्हों ने अपनी जीवन शैली का अंग बना लिया ।

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

अथर्ववेद में भैषज्यसूक्तानि के अन्तर्गत अनेकानेक रोगों का तथा उनकी औषधीयों का वर्णन मिलता है । महत्वपूर्ण यह है कि सभी औषधियाँ वनस्पतियों से प्राप्त होनेवाली है ।[19]

पृथ्वीमें होनेवाले दोषों को सुधारने का कार्य वृक्ष बडी सहजता से करते हैं । वर्तमान कलकारखानों से निकलने वाले वायवीय प्रदूषण के विष को ये शिव की तरह पी जाते है । वृक्षों की पत्तियाँ वायु में मिले प्रदूषक पदार्थों के सूक्ष्मकणों को सोक लेती है । अथर्ववेद में लिखा है कि- यस्यां वृक्षा वनस्पत्या ध्रुवास्तिष्ठन्ति विश्वहा पृथिवीं विश्वधायसं धृतामच्छावदामसि ।[20] जिस भूमिमें वृक्ष और वनस्पतियाँ सदा खडी रहती है वह भूमि विश्व के समस्त जनों का भरण पोषण करने में समर्थ होती है । यजुर्वेद में वृक्षाणां पतये नमः कहकर वृक्षोंकी रक्षा करने वालों के प्रति सत्कार प्रदर्शित किया है ।

पर्यावरण सन्तुलन के मूलमें जीव वनस्पति आदि के सह अस्तित्व का भाव है । प्रकृति का दिव्य सन्तुलन भी इसी आधार पर विद्यमान है । ऋगवेद के इस मन्त्र में बुद्धिमानों से अपेक्षा की गयी है कि वे प्रकृतिगत दैवी नियमों की मर्यादा में रहे अर्थात् प्रकृति के दिव्य सन्तुलन को न बिगाडें । न ता मिनन्ति मायिनो न धीरा व्रता देवानां प्रथमा ध्रुवाणि । न रोदसी अदुहा वेद्याभिर्न पर्वता निनमे तस्थिवांसः ।।[21]

ऋग्वेदमें वर्णन मिलता है कि ऋतुगणों ने पृथ्वी और आकाश के बीच सुरक्षा कवच के रुपमें अयन मण्डलका निर्माण करने के साथ ही कवचों का निर्माण किया । ये सुरक्षा कवच वे ही हैं जिन्हें आजका विज्ञान ओजोन पर्त के रुपमें जानता है । जो सूर्य से आती पराबैगनी किरणों को परावर्तित और निष्प्रभावी बनाने का कार्य करती है । हमारे प्रगतिशील वैज्ञानिक जिस खतरे को ओजोन क्षय के रुपमें 70 के दशकमें जान पाये उसका पूर्वाभास हमारे वेदज्ञ मनीषियों को युगो पूर्व हो चुका था । प्रकृति में देवों से प्रेरित यह अन्तरिक्ष कवच आकाश के अवांक्षनीय प्रवाहों से भूमण्डल की रक्षा करता है । अथर्ववेद कहता है कि यह कवच यज्ञ से पुष्ट हो सकता है । इयं मही प्रति गष्णहातु चर्म पृथिवी देवी सुमनस्यमान अथ गच्छेम सुकृतस्य लोकम् ।[22] यह विस्तृत देवी स्वरुपा पृथ्वी शुभ संकल्पों से युक्त होकर चर्म रुपी ढाल(सुरक्षा कवच) धारण करें । जिससे हम पुण्य प्राप्त करें ।

आज पर्यावरण में संभवतः इतना प्रदूषण न होता, अगर हमनें वैदिक ऋषियों के इस निर्देश का पालन किया होता- शतहस्त समाहर सहस्रहस्त संकिर ।[23] , अर्थात् सौ हाथों से लो लेकिन हजार हाथों से दान भी करो । हमने प्रकृति से लिया तो बहुत फर उसे दिया कुछ भी नहीं । आज हमें पुनः उन वैदिक काल के ऋषियों की वाणी पर मनन, चिन्तन और प्रयोग करने की आवश्यकता है ।

Saarth E-Journal of Research

ISSN NO: 2395-339X

सन्दर्भ सूचि-

1. ऋग्वेद 10/121/5
2. ऋग्वेद 5/52/53
3. अथ.12/1/135
4. ऋग्वेद 8/20/25
5. ऋग्वेद शा. स. 5/41/99
6. शुक्ल यजुर्वेद मा. सं. 11/25
7. शुक्ल यजुर्वेद मा. सं. 2/9
8. शुक्ल यजुर्वेद 36/17
9. ऋ.7/49/4
10. अथर्ववेद 12/1/30
11. यजुर्वेद 6/23
12. अभिज्ञान शाकुन्तलम् 1/1
13. ऋ.10/186/1-3
14. ऋग्वेद 10/136/3
15. तैत्तिरीयारण्यक 10/79
16. ऋ.10/136/3
17. अथर्ववेद 3/30/3
18. अ.वे.का12 सू.1/3334,35
19. अथर्ववेद सूक्त6/140
20. अथ. 12/2/27
21. ऋ.सं. 2 मं. सू.56-2989/1
22. अथ.सं.2का.11सू.1/2994/8
23. अथ. 3/24/5

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि-

1. ऋग्वेद, एन.एस.सोनटाके, वैदिक संशोधन मण्डल, पुणे, 1941.
2. यजुर्वेद, श्रीपाद शर्मा दामोदर सातवलेकर, स्वाध्याय मण्डल, पारडी, जि. सुरत, 1954.
3. अथर्ववेद, श्रीपाद शर्मा दामोदर सातवलेकर, स्वाध्याय मण्डल, पारडी,

Saarth E-Journal of Research

ISSN NO: 2395-339X

जि. सुरत, 1957.

4. अभिज्ञान शाकुन्तल, शान्तिकुमार पण्ड्या, पार्श्व पब्लिकेशन अहमदाबाद, 2011
5. डॉ. आशाराम, लेख- वैदिक साहित्यमें पर्यावरण संरक्षण, राजकीय महिला विश्व विद्यालय, संत कबीरनगर
6. संस्कृ वाङ्मयमें पर्यावरण चिन्तन, डॉ.राजेश सिंह, सत्यम् पब्लिशींग हाउस, नई दिल्ली,2015
7. श्रुतिमञ्जरी, प्रो. वेदप्रकाश शास्त्री, परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2006.
8. दैवत संहिता, पं. श्रीपाद शर्मा दामोदर सातवलेकर, स्वाध्याय मण्डल, पारडी, जि. सुरत, 1964.